हटकर नई तकनीकों को अपनाकर कृषि को लाभकारी व्यवसाय बना रही हैं। एग्रीकल्चरल टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एजेंसी योजना के अंतर्गत महिलाएं फील्ड भ्रमण, किसान मेले, कार्यशालाओं आदि के माध्यम से व्यावसायिक दृष्टिकोण प्राप्त कर रही हैं। वहीं गैर-सरकारी संगठन महिलाओं को प्रशिक्षण, वित्तीय साक्षरता, विपणन कौशल और उद्यमिता विकास से जोड़कर स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से उन्हें सामूहिक खेती और विपणन के लिए तैयार कर रहे हैं। इन प्रयासों से महिलाओं में तकनीकी दक्षता, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास हो रहा है, जो न केवल उनके परिवार बल्कि समग्र ग्रामीण कृषि तंत्र को भी सशक्त बना रहा है। महिलाओं की यह प्रगति छत्तीसगढ़ जैसे राज्य के लिए प्रेरणास्पद दिशा प्रदान कर रही है।

जलवायु अनुकूल कृषि में महिलाओं की भूमिका

महिलाएं आज जलवायु अनुकूल कृषि में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण खेती पर बढ़ते संकटों के बीच महिलाएं ऐसी तकनीकों और पद्धतियों को अपना रही हैं जो पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और सतत हैं। वे जैविक खेती, कृषि पारिस्थितिकी और स्थायी कृषि प्रथाओं के माध्यम से न केवल उत्पादन को सुरक्षित बना रही हैं, बल्कि मिट्टी, जल और जैव विविधता का संरक्षण भी कर रही हैं। ग्रामीण महिलाएं देसी बीजों का संरक्षण, गोबर व गोमूत्र आधारित जैविक कीटनाशकों का प्रयोग, फसल चक्र और मिश्रित खेती जैसी पद्धतियों को अपनाकर खेती की लागत कम कर रही हैं और पर्यावरण को भी संतुलित बनाए रख रही हैं। वे वर्षा जल संचयन, बायो-कम्पोस्ट, और खेत में पोषण पुनर्चक्रण जैसी तकनीकों का प्रयोग कर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने में सक्षम हो रही हैं। इन प्रयासों से न केवल फसल की गुणवत्ता और किसान की आय में सुधार हो रहा है, बल्कि स्थानीय खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित हो रही है। महिलाओं की यह भूमिका आज जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध स्थानीय और व्यावहारिक समाधान प्रदान कर रही है और उन्हें पर्यावरण रक्षक तथा सतत विकास की अग्रणी शक्ति के रूप में पहचान दिला रही है।

भविष्य की दिशा: युवा और अगली पीढ़ी की महिला एग्रीप्रेन्योर्स

कृषि के क्षेत्र में युवा और अगली पीढ़ी की महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना सतत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में यह आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों की किशोरियों और युवतियों को एग्रीप्रेन्योरशिप (कृषि उद्यमिता) की दिशा में प्रेरित किया जाए, ताकि वे पारंपरिक भूमिकाओं से आगे बढ़कर खेती को एक वैज्ञानिक, लाभकारी और आधुनिक व्यवसाय के रूप में अपनाएं। इसके लिए शिक्षा और मार्गदर्शन की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। स्कूल और कॉलेज स्तर पर कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने, प्रायोगिक प्रशिक्षण, नवाचार क्लब, स्टार्टअप मॉडल, और एग्री-बिजनेस पाठ्यक्रमों को ग्रामीण छात्राओं तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, सफल महिला एग्रीप्रेन्योर्स को मेंटर्स के रूप में प्रस्तुत कर, उनके अनुभव साझा करने और नेटवर्किंग के माध्यम से युवा लड़कियों को प्रेरित किया जा सकता है।सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, इनक्यूबेशन सेंटर, और डिजिटल तकनीक तक पहुंच सुनिश्चित कर अगली पीढ़ी की महिलाएं खेती के क्षेत्र में नवाचार ला सकती हैं। जब ग्रामीण बालिकाएं आत्मविश्वास के साथ खेती को एक व्यवसाय के रूप में देखेंगी, तभी स्वावलंबी और प्रगतिशील ग्रामीण भारत की नींव मजबूत होगी।इस प्रकार, शिक्षा, प्रेरणा और सहयोगात्मक वातावरण के माध्यम से युवा और अगली पीढ़ी की महिलाएं न केवल एग्रीप्रेन्योर बन सकती हैं, बल्कि वे कृषि में नेतृत्व की नई मिसाल भी स्थापित कर सकती हैं।

प्रस्तुतकर्ता :
पी. मूवेन्थन, गुंजन झा, श्रावणी सान्याल, निरंजन प्रसाद, सुमन सिंह एवं हेम प्रकाश वर्मा।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क: nasf9033nibsm@gmail.com

प्रकाशक :
डॉ. पी. के. राय
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2277333
ई–मेल – director.nibsm@gmail.com

Publication No. - NIBSM/EF/2025/84

भाकृअनुप
ICAR

National Agricultural Science Fund
राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष

Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

कृषि में महिला उद्यमिता: छत्तीसगढ़ की अग्रणी महिलाएँ

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2277333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2277333
E-mail : director.nibsm@gmail.com

छत्तीसगढ़ कृषि में महिलाओं की भूमिका: पारंपरिक बनाम आधुनिक दृष्टिकोण

छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। पारंपरिक रूप से, महिलाएं कृषि कार्यों में पुरुषों के साथ सहयोग करती थीं, जैसे बीजों का संरक्षण, बुवाई, कटाई, और फसल के बाद की गतिविधियाँ। इसके अलावा, दुग्ध उत्पादन, बकरी पालन, और मुर्गी पालन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हालांकि, वे अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रहती थीं और भूमि स्वामित्व में उनकी भागीदारी सीमित थी। वर्तमान में, छत्तीसगढ़ की महिलाएं अब केवल सहायक की भूमिका में नहीं हैं; वे स्वतंत्र कृषि उद्यमियों के रूप में उभर रही हैं। डिजिटल साक्षरता और सरकारी योजनाओं के समर्थन से, महिलाएं जैविक खेती, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, वर्मी कम्पोस्ट, और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। स्वयं सहायता समूहों और महिला किसान उत्पादक कंपनियों के माध्यम से वे अपनी आय बढ़ा रही हैं और अन्य महिलाओं को प्रेरित कर रही हैं। महिलाएं अब मोबाइल ऐप्स और सोशल मीडिया का उपयोग करके अपने उत्पादों की सीधी बिक्री कर रही हैं। इन प्रयासों से वे न केवल पारिवारिक अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रही हैं, बल्कि छत्तीसगढ़ की कृषि व्यवस्था में भी बदलाव ला रही हैं। उनकी भागीदारी कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में बढ़ रही है, जिससे उन्हें एक सशक्त और आत्मनिर्भर 'एग्रीप्रेन्योर' के रूप में पहचान मिल रही है।

छत्तीसगढ़ की अग्रणी महिला एग्रीप्रेन्योर्स: सफलता की प्रेरक कहानियाँ

छत्तीसगढ़ में महिलाएं आज पारंपरिक कृषि भूमिकाओं से आगे बढ़कर नवाचार और उद्यमिता की दिशा में सशक्त कदम रख रही हैं। राज्य की अनेक महिला किसानों ने न केवल अपने परिवार की आय बढ़ाई है, बल्कि गांवों की अर्थव्यवस्था को भी नई दिशा दी है।

1. लक्षपाल बाई: समेकित कृषि से आत्मनिर्भरता की मिसाल

कांकेर जिले के ग्राम बोडी की 55 वर्षीय लक्षपाल बाई ने केवीके कांकेर से प्रशिक्षण लेकर समेकित कृषि प्रणाली (IFS) अपनाई। 17 एकड़ भूमि में सब्जी उत्पादन, बकरी पालन, डेयरी, मछली-बत्तख पालन और नेपियर घास की खेती को शामिल कर वे वर्षभर आय अर्जित कर रही हैं। उन्होंने 10 एकड़ में सब्जी से ₹6 लाख, बकरी पालन से ₹1.5 लाख, 4 गायों से दूध उत्पादन से ₹4.5 लाख तथा मछली-बत्तख पालन से ₹50,000 की वार्षिक आय अर्जित की। नवाचारों में जैविक खाद, मल पोषक उपयोग व फसल अपशिष्ट से चारा निर्माण प्रमुख हैं। उनके कार्य को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है और उन्हें पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनका मॉडल आज ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

2. नम्रता घई: रसायन विज्ञान से मशरूम उद्यमिता तक

ग्राम तांडवा, नया रायपुर, छत्तीसगढ़ की नम्रता घाटी ने एम. एस.सी. रसायन शास्त्र के बाद सरकारी कॉलेज की नौकरी छोड़ वर्ष 1994–95 में मशरूम खेती शुरू की। 100 बैग से शुरुआत कर आज वे एक एकड़ में 50,000 बैग उत्पादन व ₹1 करोड़ वार्षिक टर्नओवर हासिल कर रही हैं। उन्होंने स्पॉन उत्पादन में आत्मनिर्भरता, प्रसंस्कृत उत्पाद (अचार, पाउडर, सूखे मशरूम) और खुदरा-ब्रांडिंग से बाजार में खास पहचान बनाई। सैकड़ों महिलाओं को प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया। उन्हें ASPEE महिला किसान अवार्ड व इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय पुरस्कार मिल चुके हैं। उनका सफर छत्तीसगढ़ की महिलाओं के लिए नवाचार और साहस का प्रतीक है।

3. गिरीजा कुंजाम: सीमित संसाधनों में मशरूम की सफलता

ग्राम गोटाटोला (अंबागढ़ चौकी), जिला राजनांदगांव की गिरीजा कुंजाम ने 500 वर्गफुट क्षेत्र में ऑयस्टर मशरूम उत्पादन शुरू कर नवाचार का उदाहरण पेश किया। 12वीं तक शिक्षित गिरीजा जी ने 20×20 वर्गफुट कमरे में इकाई स्थापित कर सालभर उत्पादन से ₹30,000–₹55,000 की आय अर्जित की। वे अचार, बड़ी और सूखे मशरूम जैसे मूल्यवर्धित उत्पाद भी बनाती हैं। प्रशिक्षण देकर अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रही हैं। उनके प्रयासों के लिए IGKV से "कृषक समृद्धि पुरस्कार" मिला। उनका मॉडल छोटे व भूमिहीन किसानों के लिए प्रेरणा है।

4. नीतू साहू: जीरो बजट प्राकृतिक खेती की मिसाल

ग्राम मोकला (जिला राजनांदगांव) की नीतू साहू ने 3 एकड़ में बिना रासायनिक उर्वरकों के शून्य बजट प्राकृतिक खेती अपनाकर टिकाऊ कृषि का आदर्श प्रस्तुत किया। 10वीं तक शिक्षित नीतू जी पिछले 8 वर्षों से देसी गाय के गोबर-गोमूत्र से बने जीवामृत, ब्रह्मास्त्र, नीमास्त्र आदि का उपयोग कर स्वास्थ्यवर्धक व पर्यावरणहितैषी उपज ले रही हैं। उन्हें ICAR द्वारा प्राकृतिक खेती पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आज वे अन्य महिला किसानों के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं और आत्मनिर्भरता की दिशा दिखा रही हैं।

कृषि में महिला किसानों के सशक्तिकरण हेतु सरकारी प्रयास

भारत सरकार महिलाओं की कृषि में भागीदारी बढ़ाने के लिए महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना सहित कई योजनाएं चला रही है, जो राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत कार्यरत हैं। इसका उद्देश्य महिलाओं को तकनीकी, वित्तीय व संगठनात्मक सहायता प्रदान कर प्राकृतिक खेती, जैविक उत्पादन, बीज उत्पादन, पशुपालन आदि में दक्ष बनाना है। दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से स्वरोजगार, सस्ती ऋण, विपणन सहायता और उद्यमिता प्रशिक्षण दिया जाता है। कृषि सखी मॉडल और स्वयं सहायता समूहों आधारित विस्तार प्रणाली भी महिलाओं को कृषि में प्रशिक्षित कर उन्हें वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करने व सामूहिक गतिविधियों जैसे वर्मी कम्पोस्ट, मशरूम उत्पादन, मूल्य संवर्धन आदि में जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। ये योजनाएं महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बना रही हैं, बल्कि उन्हें निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाकर आत्मनिर्भरता और सम्मान प्रदान कर रही हैं।

महिलाओं को सशक्त बनाने वाली सरकारी योजनाएँ

भारत सरकार कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत संचालित कर रही है। इसका उद्देश्य महिलाओं को तकनीकी, वित्तीय व संगठनात्मक सहायता देकर प्राकृतिक खेती, जैविक उत्पादन, बीज उत्पादन, पशुपालन और जल प्रबंधन में दक्ष बनाना है। इसी तरह दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से महिलाएं स्वयं सहायता समूहों में संगठित होकर स्वरोजगार, सस्ती ऋण, विपणन सहायता और कौशल विकास प्रशिक्षण से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। कृषि सखी मॉडल व स्वयं सहायता समूह आधारित विस्तार प्रणाली भी महिलाओं को कृषि में प्रशिक्षित कर उन्हें वैज्ञानिक जानकारी साझा करने और सामूहिक रूप से वर्मी कम्पोस्ट, मशरूम उत्पादन, मूल्य संवर्धन जैसे कार्यों में जोड़ रही हैं।ये योजनाएं महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाकर उन्हें सशक्त, आत्मनिर्भर और सम्मानजनक स्थान प्रदान कर रही हैं।

महिला उद्यमिता और कृषि आधारित मूल्य संवर्धन में भूमिका

ग्रामीण महिलाएं अब पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर कृषि आधारित उद्यमिता और मूल्य संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। मशरूम उत्पादन, अचार-पापड़ निर्माण, शहद उत्पादन और खाद्य प्रसंस्करण जैसे कार्यों में वे कम लागत में अधिक लाभ अर्जित कर आत्मनिर्भर बन रही हैं। वे टमाटर चटनी, आम अचार, ड्राई फ्रूट मिक्स, आटा मिक्स, इमली कैंडी आदि उत्पाद बनाकर ब्रांडिंग और पैकेजिंग के जरिए बाजार में पहचान बना रही हैं। इन गतिविधियों ने न केवल उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त किया है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान की है।

महिला एग्रीप्रेन्योर्स और डिजिटल तकनीक का उपयोग

डिजिटल युग में महिला एग्रीप्रेन्योर्स मोबाइल, इंटरनेट और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी टूल्स का प्रभावी उपयोग कर रही हैं। वे मोबाइल ऐप्स से मौसम, बीज, खाद, कीट प्रबंधन व सरकारी योजनाओं की जानकारी पा रही हैं। व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से संवाद, प्रशिक्षण सामग्री साझा और समस्याओं का समाधान कर रही हैं। सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सएप बिजनेस से वे अचार, पापड़, मशरूम, शहद जैसे उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री कर रही हैं, जिससे बिचौलियों पर निर्भरता घटकर लाभ बढ़ा है। डिजिटल तकनीक से वे तकनीकी रूप से सशक्त, आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सामाजिक रूप से सम्मानित हो रही हैं—यह ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण की नई दिशा है।

महिला एग्रीप्रेन्योर्स द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ

छत्तीसगढ़ सहित पूरे भारत में महिलाएं कृषि क्षेत्र में उद्यमिता की ओर अग्रसर हैं, लेकिन उन्हें भूमि स्वामित्व की कमी, ऋण तक सीमित पहुंच, प्रशिक्षण अवसरों की कमी और सामाजिक मान्यताओं जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अधिकतर जमीन पुरुषों के नाम पर पंजीकृत होने के कारण महिलाएं सरकारी योजनाओं और वित्तीय सुविधाओं से वंचित रह जाती हैं। घरेलू जिम्मेदारियाँ और पारंपरिक सोच भी उनके आगे बाधा बनती हैं। फिर भी, जो महिलाएं इन चुनौतियों को पार कर रही हैं, वे दूसरों के लिए प्रेरणा बन रही हैं। अतः महिलाओं को भूमि अधिकार, वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और सामाजिक सहयोग प्रदान कर उन्हें कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

महिलाओं के सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों और सहकारी संस्थाओं की भूमिका

ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और सहकारी संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। ये समूह महिलाओं को संगठित कर वित्तीय समावेशन और सामूहिक खेती के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में ले जाते हैं। SHG के माध्यम से महिलाएं बचत और आंतरिक ऋण लेकर मशरूम उत्पादन, बकरी पालन, अचार-पापड़ निर्माण, वर्मी कम्पोस्ट जैसे कार्यों में लगी हैं। सामूहिक खेती से लागत घटती है और उत्पादकता बढ़ती है, जो ज़मीन या संसाधन न होने पर भी लाभकारी है। छत्तीसगढ़ में कई महिला-नेतृत्व वाली किसान उत्पादक कंपनियाँ सफलतापूर्वक चल रही हैं, जो उन्हें बाजार, ब्रांडिंग और सामूहिक विपणन से जोड़कर बेहतर मूल्य दिला रही हैं। इन प्रयासों से महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं, बल्कि नेतृत्व और सामाजिक पहचान भी प्राप्त कर रही हैं। यह साबित करता है कि यदि महिलाओं को संगठित कर संसाधन और प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे कृषि क्षेत्र में परिवर्तन की अग्रणी शक्ति बन सकती हैं।

महिला किसानों के लिए प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास: कृषि विज्ञान केंद्र, एग्रीकल्चरल टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एजेंसी और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

ग्रामीण क्षेत्रों की महिला किसानों को आत्मनिर्भर, सशक्त और दक्ष बनाने के लिए प्रशिक्षण और क्षमता विकास अत्यंत आवश्यक है। कृषि विज्ञान केंद्र , एग्रीकल्चरल टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एजेंसी और विभिन्न गैर-सरकारी संगठन इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं। कृषि विज्ञान केंद्र महिलाओं को खेती, मशरूम उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट, मधुमक्खी पालन, खाद्य प्रसंस्करण और जैविक खेती जैसे विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, जिससे वे पारंपरिक विधियों से